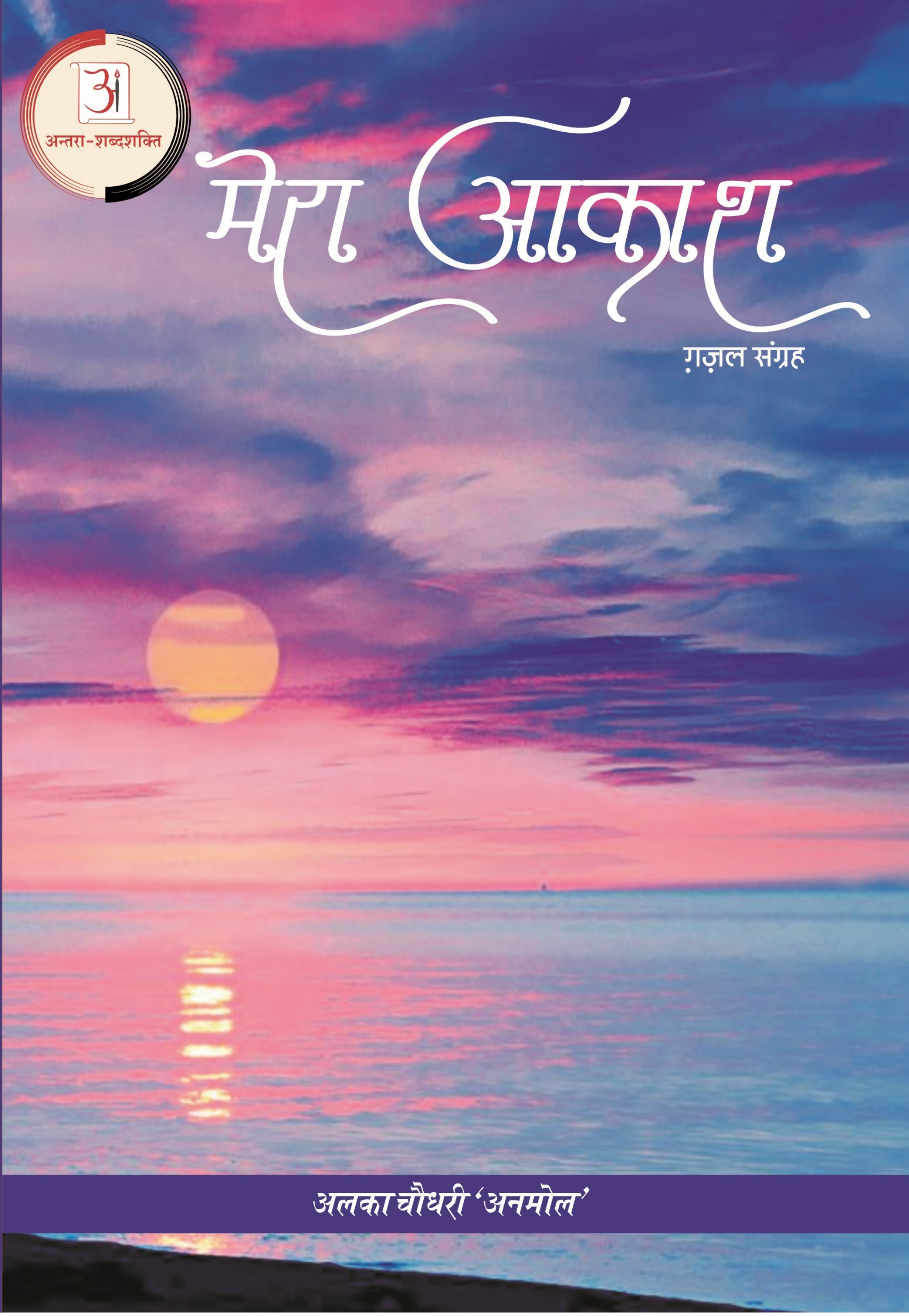

अन्तरा-शब्दशक्ति

मेरा आकाश

ग़ज़ल संग्रह

अलका चौधरी 'अनमोल'

मेरा आकाश

(ग़ज़ल संग्रह)

अलका चौधरी 'अनमोल'

अन्तरा- शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-86666-92-5"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय-१५ नेहरु चौक वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- अलका चौधरी 'अनमोल'
मूल्य-६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

MERA AKASH BY ALKA CHAUDHRY

वैधानिक चेतावनी-इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

मेरी कलम से 5
1. नगमा 7
2. चले आइए 8
3. जख्म दिल का 9
4. ख्वाहिशें 10
5. इंतजार 11
6. सीख ले 12
7. रस्म 13
8. सैनिक 14
9. प्यार के अनमोल किस्से 15
10. मुहब्बत में दिल 16
11. जिन्दगी के खूबसूरत रंग 17
12. हौसलों की डोर 18
13. माया 19
14. खुशियों के दामन 20
15. विरासत 21
16. अनमोल 22
17. प्यार का बंधन 23
18. मखमली आवाज़ 24
19. निगाहें 25
20. दीवानगी 26
21. सरहद 27
22. यादों का मौसम 28
23. अँगना 29
24. मुलाकात 30
25. पैगाम 31
26. सावन की पहली बारिश 32

मेरी कलम से

अपने भावों को लिपिबद्ध कर बिखरे मनके को एकत्र कर माला तैयार कर मैंने अपनी ग़ज़लों को आप सभी के समक्ष "मेरा आकाश", सामाजिक, सांस्कृतिक प्रतिमानों पर आधारित समसामयिक, भावनात्मक एवं व्यावहारिक पहलुओं पर अपनी लेखनी चलाने का प्रयास किया है, भावी पीढ़ी को अपनी अनुभूतियों एवं विमर्श के माध्यम से जोड़ने का प्रयास किया है ।

भावों को विस्तार देते हुए कम शब्दों में अधिक से अधिक बात कहना ग़ज़लों की खासियत होती है, मुझे पूर्ण विश्वास है, कि मेरे भाव जनमानस तक पहुंचकर गहन चिंतन मनन करने पर विवश कर देंगे, अपितु उसे देखने और अनुभव करने, अपनी की दृष्टि प्रदान करेगी। मन से उतरता हर भाव पाठक के न केवल मस्तिष्क को खंगालेगा बल्कि उद्वेलित करता हुआ अपना स्थान हृदय में छोड़ जाए यही प्रयास इन ग़ज़लों के माध्यम से किया है।

छब्बीस ग़ज़लों की इस पुस्तिका के प्रकाशन के लिए आदरणीय प्रीति समकित सुराना जी, जिन्होने पुस्तिका का संपादन किया है, उनके प्रोत्साहन एवं अपने परिवार तथा

इष्टमित्रों के आशीर्वाद से संकल्पित भाव से अपने इस संकलन का प्रकाशन कर एक दस्तावेज के रूप मे आप तक पहुँचाया है। मुझसे जो भी गलती होती है, जो कि स्वाभाविक है, मैं करबद्ध क्षमाप्रार्थी हूँ ।

अलका चौधरी 'अनमोल'

बालाघाट (म.प्र.)

नगमा

मुहब्बत निभा ले, मुहब्बत निभाले,
किया दिल जिगर सब तुम्हारे हवाले।

बिना तेरे ये जिंदगानी अधूरी,
हमे मुश्किलों से ओ यारा बचाले।,

दिवानगी की हुई पार हद है,
दिल ना सम्हलता तू ही सम्हाले।

नहीं मानता बावला हो गया है,
तेरी गर सुने तो तू ही मनाले।

उदासी बड़ी शाम तनहाई डसती,
चले आओ नगमा कोई गुनगुनालें।

भटकना नहीं जिंदगी के सफर में,
मुहब्बत भरा आशियाना बनालें ।

है "अनमोल" जादूगरी बीन तेरी,
बजा प्यार वाली मुझे तू बुला ले।

चले आइए

प्यार ही बंदगी है, चले आइए।
जिंदगी दो घड़ी है, चले आइए।

आँख दर पे लगी है, चले आइए।
जान पर अब बनी है, चले आइए।

चाहतो का नगर रात है, मखमली,
कह रही चाँदनी भी चले आइए ।

एक मुद्दत हुई आपको देखके,
आँख फिर शबनमी है, चले आइए।

आसमां राज़दां ईश्क का साहेबा,
कैसी ये बेबसी है, चले आइए।

लब खुले थरथराए है, खामोशियाँ,
मन से मन की ठनी है, चले आइए।

धड़कनें है, बढ़ी साज ए दिल बज उठे,
नज्म ए उल्फत कहीं है, चले आइए।

ग़म ज़दा मौसमी अलका पुरवाईयाँ,
बात दिल पे लगी है, चले आइये।

जख्म दिल का

दर्द दिल में कोई उठा होगा,
शूल बनकर उसे चुभा होगा।

आँख गुमसुम नमी जरा देखो,
जख्म दिल का हरा-हरा होगा।

तिनका तिनका बिखर रहा है ये,
ईश्क की आग में जला होगा।

खुद को यूँ ही मिटा नहीं सकता,
आसरा ना कोई मिला होगा।

मुद्दते हो गई सिले लब क्यूँ,
राज कोई कहीं दबा होगा।

आसमां ग़म में उसके तड़पा है,
कुछ न कुछ तो उसे कहा होगा।

खाक में मिल गया सभी अलका,
दिलजलों का ही जलजला होगा।

ख्वाहिशें

कली फूल बनकर संवरने लगी है।
हवा मनचली हो, बहकने लगी है।

मुहब्बत भरी वादियों की खनक में,
वो साजन से मिलके महकने लगी है।

लगी आग दिल में लगन है मिलन की,
लो सावन की बूँदे बरसने लगी है।

अदाएं गजब शोख, चंचल, नशीली,
शरारत नज़र में झलकने लगी है।

मुहब्बत का तेरी असर देख ले अब,
दबी ख्वाहिशें भी मचलने लगी है।

रफ्ता ए रफ्ता सफर चल पड़ा अब,
सुनो जिंदगी रश्क करने लगी है।'

मिला साथ अलका सुकूने जिगर को,
ग़मो की तपन भी पिघलने लगी है।

इंतजार

प्यार ही प्यार यार आ जाओ,
दिल को आए करार आ जाओ।

चाहतों का बंधा हसीं बंधन,
जिंदगी है, निसार आ जाओ।

खूबसूरत फिज़ा सुनाती है,
दिल ने छेड़े हैं तार आ जाओ।

जागते-जागते कटी रातें,
सांस भी बेकरार आ जाओ।

धड़कने नाम बस तेरा लेकर,
कह रही बार-बार आ जाओ।

एक पल भी भुला नहीं पाए,
प्यार की है पुकार आ जाओ।

चाल है, ये कोई तुम्हारी क्या,
कश्मकश है, हजार आ जाओ।

ग़म की बारिश बहुत हुई अलका,
कब तलक इंतजार आ जाओ।

सीख ले

हो अगर कांटे निभाना सीख ले,
हर गरल दिल का गलाना सीख ले।

आजमाता जख्म भी देता समय,
इक हँसी लब पर सजाना सीख ले।

रंजिशों का काम क्या है, सुन यहाँ,
गुल मुहब्बत के लगाना सीख ले।

भर उड़ानें सीख ले जिंदादिली,
कैद से पंछी उड़ाना सीख ले।

लब सजेगे जीत और गजलों से भी,
दर्द से रिश्ता निभाना सीख ले।

खूबसूरत ख्वाब से मिल जाओगे,
प्यार पलकों पर बसाना सीख ले।'

लोग अलका ये नही बदले कभी,
बात जो चुभती भुलाना सीख ले।

रस्म

साथ ये छोड़ जाना नहीं,
बेवजह सी लगे जिन्दगी।

ख्वाब पलकों तले सज गये,
मुहब्बत से ही बंदगी।

प्रीत की राह जब चल पड़े,
ये खुशी भी तभी तो मिली।

इम्तहां की डगर ना मिले,
दिन भी ऐसे लगे हो सदी।

छोड़कर के चले जाओगे,
भूलकर भी न कहना कभी।

आँखो ने ये कहा क्या अभी,
यार सुन ले ये धड़कन बढ़ी।

चलना चाहें कहीं से अगर,
ये कदम मुड़ते तेरी गली।

दिल ने अनमोल सजदा किया,
इश्क़ की हर रस्म है, निभी।

सैनिक

करी है दोस्ती बस नफरतों से।
भरी है वादियाँ इन कायरों से।

बढ़ी है, कायराना हरकते क्यूँ,
करे ये वार जालिम पत्थरों से।

मिन्नतों को नही समझ पायेंगे,
निकल के आ गये है, जो हदों से।

सबक अब तो सिखाना ही पड़ेगा,
जनाजे आ गए फिर सरहदों से।

करा है, वार हर समय पीठ पीछे,
नहीं उम्मीद कोई बुजदिलों से।

कसम है, वतन के सरपरस्तों की,
कहो जाकर अमन के दुश्मनों से।

तिरंगे पर फ़ना हो कर चले जो,
बढ़ा है मान 'अलका' सैनिकों से।

प्यार के अनमोल किस्से

जिंदगी में जब मिलेंगे देखना।
गुल मुहब्बत के सजेंगे देखना।

तुम हमारे जो अगर से हो गये,
दिलजले सुनकर जलेंगे देखना।

छोड़ कर के जो हमें तुम जाओगे,
राह में नैना बिछेंगे देखना।

आप जब भी रूठ जाओगे कभी,
मान के झरने बहेँगे देखना।

लाख हमको दूर कर दे तू मगर,
दिल में तेरे ही रहेंगे देखना।

प्यार के अनमोल किस्से जो बनें,
लोग कहते ना थकेंगे देखना।

मुहब्बत में दिल

नहीं मानता आपका हो गया।
मुहब्बत में दिल बावला हो गया।

मिली है, नजर से नजर प्यार में,
मुलाकात का सिलसिला हो गया।

नहीं सुन रहा ये हमारी जरा,
खिचा जा रहा तू खुदा हो गया।

कदम ही नहीं थम रहे अब सुनो,
उल्फत से जब सामना हो गया।

भटकते थे' यूँ ही अँधेरे में हम।
सफर रोशनी का भला हो गया।

चुराया हमी को हमी से भला क्यूँ,
दिवाना हुआ कब फना हो गया।

खिले फूल चाहत के अलका ,
महकता बहकता समा हो गया।

जिन्दगी के खूबसूरत रंग

जिंदगी इक गीत, गाना चाहिए,
भूल रंजो ग़म बिताना चाहिए।

राह में आ जाए मुश्किल क्या हुआ,
हौसलों के पग बढ़ाना चाहिए।

मुस्कुराहट का नहीं कोई मोल है,
सुख हो या दु:ख मुस्कुराना चाहिए।

प्यार से आवाज दे कोई अगर,
दौड़ कर हमको भी आना चाहिए।

राधा भी इठलायेगी बल खायेगी,
कान्हा सी बंशी बजाना चाहिए।

हो समर्पण भाव रोली पुष्प हो,
थाल पूजन का सजाना चाहिए।

जिन्दगी के खूबसूरत रंग "अलका"
दिल में आँखों में बसाना चाहिए।

हौसलों की डोर

साथ सबका तुम निभाना दोस्तों।
जिंदगी मिलकर बिताना दोस्तों।

प्रेम के नगमें लिखे बस ये कलम,
इस जहाँ के गम मिटाना दोस्तों।

हौसलों की डोर ना टूटे कभी,
आँच में खुद को तपाना दोस्तों।

ये जन्म मिलता बड़ी मुश्किल से' है,
खुद हँसो सबको हँसाना दोस्तों।

बस मुहब्बत ही मुहब्बत हो जहाँ,
ऐसी इक दुनिया बसाना दोस्तों।

लाख तू इसको छुपा लेना मगर,
झूठ का न है, ठिकाना दोस्तों।

गीत कोई गुनगुना 'अलका' अभी,
इक ग़ज़ल ताज़ा सुनाना दोस्तों।

माया

उलझन भरी है, जिंदगी परवाह नहीं है,
ईमारत बनीं ऊँची तंग दिल की गली है।

खुद आदमी ही आदमी को खोजता फिरे,
बेलगाम भागता ही रहा भीड़ बड़ी है।

मशीनों सा आदमी ने खुद को बना लिया,
कब भोर हो रही है, कब शाम ढली है।

नाजुक सा था, इक ख्वाब जो पल में सिमट गया,
मिल जाये उसे देखने आँखे भी थकी है।

दो जून की रोटी ने बेघर किया ऐसे,
गाँवों की जिंदगी भी शहर को ही चली है।

एहसास के मोती तो चूर चूर हो गये,
हो रहा है, शोर सच की आवाज दबी है।

इंसानियत इंसान से नहीं सम्हल रही,
अनमोल माया हो गई सुख भोग रही है।

खुशियों के दामन

छत पे बैठ रात को मैं तारों को गिनती रही।
चाँद से मैं प्यार की हर बात पूछती रही।

लफ्ज बेसदा थे और होंठ बंद हो गये,
आँखो - आँखो में ही मुलाकातें अब चलने लगी।

कश्ती थी, पतवार थी और पास में साहिल भी था,
प्यार की गहराई में हर वक्त डूबती रही।

ताउम्र की तलाश में जब मुझसे मिल गया था वो,
खुश्बू प्यार की उड़ी और सांस महकती रही।

बढ़ने से रोका जहाँ की बंदिशें लगने लगी,
मिल गया आकाश मेरा संग में उड़ती रही।

खुशियों के दामन मे अलका फूल जो खिलने लगे,
साथ जो मिला तेरा हर गम को भूलती रही।

विरासत

विरासत दे नहीं सकती, विरासत दे नहीं सकती।
तज़रिबे से जो मिलता है, वसीयत दे नहीं सकती।

हकीकत वो जिसे झुठला नहीं सकते कभी भी हम,
मुहब्बत से जो मिलता है, सियासत दे नहीं सकती।

भले कुर्बत के साये हो, सचाई पर अड़े रहना।
मुहब्बत झूठ के दम पर मुहब्बत दे नहीं सकती।

यही गीता ने सिखलाया, यही कुरआन कहता है,
सदाकत से जो मिलता है, बगावत दे नहीं सकती।

रहे ईमां धरोहर की, तरह बस जिंदगानी में,
बड़ा अनमोल गहना है, जो दौलत दे नहीं सकती।

अनमोल

मुहब्बत मे तेरी जहाँ को भुला दूँ।
दिलों जान सब कुछ तुम्ही पे लुटा दूँ।

ख्यालों मे तुम ही बसे हो हमारे,
यकी गर नही धड़कने मैं सुना दूँ।

सितम चाहे करले तुझे जो भी करना,
उल्फत का नफ़रत मैं कैसे सिला दूँ।

वफा इश्क चाहत का घर है, यहाँ पर,
चलो साथ मेरे मैं तुमको मिला दूँ।

अदाएं शरारत गजब ढा रही है,
मुहब्बत - मुहब्बत है तुझको बता दूँ।

हंसते रहे हम सदा गुल के जैसे,
सुनों दिल मैं कैसे किसी का दुखा दूँ।

जहाँ प्यार "अनमोल" चाहत रहे बस,
सितारों जड़ी एक दुनिया बसा दूँ ।

प्यार का बंधन

फूल खुशियों के खिला देगा,
जिंदगी से वो मिला देगा।

क्या बनाये हैं, अटारी महल,
छत उन्ही को यूँ दगा देगा।

सच अगर साथ तू रखेगा तो,
तेरी किस्मत तुझे खुदा देगा।

न सुनेगा नहीं सुना अब तक,
फैसला फिर वही सुना देगा।

जा चला जा जहाँ तुझे जाना,
प्यार फिर भी तुझे वफा देगा।

वक्त की मार जब पड़ेगी तो,
देख लेना वही उठा देगा।

मुस्कुहट का वास्ता देकर,
रोज एक जख्म फिर नया देगा।

प्यार का ये बंधन है,
दुश्मनों को सदा मिटा देगा।

मखमली आवाज़

गूँजती है, सदा वही होगी।
मेरी आवाज़ मखमली होगी।

बांसुरी सी बजी मधुर स्वर में,
प्यार की जब हवा चली होगी।

चाँदनी सी सजी- धजी बैठी,
चाँद की राह ताकती होगी।

राम जाने क्या ईशारा था,
सुन मुहब्बत कहीं मिली होगी।

चैन खोया करार भी खोया,
बात नैनों से कुछ कही होगी।

दूर हमसे कभी नहीं होना,
जिंदगी - जिंदगी नहीं होगी।

सांस में रंग भर रहे हो तुम,
पास अनमोल हर खुशी होगी ।

निगाहें

रंग को रोज - रोज अपने बदलते क्यों है,
हार हो जाये तो आंहे वो भरते क्यों है।

दूध जिसको पिला - पिला के हमने है पाला,
नाग बन - बन के वही लोग डसते क्यों है।

मै भी हैरान हूँ, उस रोशनी के जलवे से,
शमा को देख के परवाने जलते क्यों है।

बड़ी तहजीब की बातें अदब से है, करतें,
वफा ईमान-ए-धरम फिर भी सस्ते क्यों हैं ।

मेरी परवाज आसमानो से भी हैं ऊँची,
तब भी ये पाँव जमीं पर ही ठहरते क्यों है।

झूठ को तुम छुपाके रख लो सौ परदों में,
सच्चाई से ही मिलेगे फिर डरते क्यों है।

घुमड़ - घुमड़ के जो निगाह मे बसते अलका,
नफरतों के जो है बादल नहीं छटते क्यूँ है।

दीवानगी

खूबसूरत अदा मुहब्बत है।
दर्दे दिल की दवा मुहब्बत है।

नेमते रब हसीन तोहफा भी,
बंदगी भी खुदा मुहब्बत है।

आँख जो भी सुना रही है वो,
शबनमी दासता मुहब्बत है।

आमदे हो जहाँ खुशियों की,
बरकते भी सदा मुहब्बत है।

इंद्रधनुषी ख्वाब ही पलते,
सात रंगों, लिखा मुहब्बत है।

जानते हो दीवानगी की हद,
लफ्ज़ है इक नशा मुहब्बत है।

जब कभी रास्ते तनहा अलका,
थामती तब जरा मुहब्बत है।

सरहद

जिंदगी में वो कभी हारा न था,
हौसले भरमार भरमाया न था।

दीप भी खामोश माँ को देखते,
लाड़ला सरहद से जो लौटा न था।

रीत कैसी ये अमीरी की चली,
जो भी हो मज़लूम वो सच्चा न था।

शाम ये जैसे ढली सी जा रही,
राह देखे आँख कुछ भाता न था।

दिल सुनो बस बात कहता है यही,
जो किया टूटा कभी वादा न था।

आंधियाँ कैसी चली खामोश लब,
जिंदगी मे जो कभी बिखरा न था।

यूँ हकीकत से परे धोखे में हो,
जो दिखाया वो कोई सपना न था।

जोड़कर तिनको से था जो बना,
आज उसका घर में इक हिस्सा न था।

हमसाया सच का बड़ा अनमोल है,
झूठ जाने क्यूँ उसे चुभता न था।

यादों का मौसम

दिवाना कहो या कहो आशिकाना,
फसाना मुहब्बत का सबसे पुराना।

चलो इक कदम तुम चले, इक कदम हम,
मिलेगा तभी प्यार का इक खजाना।

सनम रात भर से नहीं सो सके है,
ख्वाबो खयालो मे महफिल सजाना।

नहीं भूल सकते कभी भी नहीं ये,
वही छेड़ना और तुम्हारा सताना।

चमकता सितारा रहे प्यार मेरा,
शबनमी हंसी चाँदनी मे नहाना।

वही रात है तेज बारिश वही है,
अनमोल यादों का मौसम सुहाना ।

अँगना

करो एक वादा उसे सब निभाना।
कभी द्वेष की न दुकानें सजाना।

अगर चाहते हो खुशी हो सभी दर,
दिलो मे बसा दुष्ट रावण जलाना।

घड़ा पाप का जब भरा है, जहाँ में,
धनुष राम का, तीर तरकश से आना।

कभी संस्कारो से दूरी नहीं हो,
सुनो आँगना अपने तुलसी लगाना।

मुहब्बत भरी बात भाती सभी को।
दिलों में छिपी हर बुराई मिटाना।

नहीं भूल सकते अनमोल बचपन,
वो मिट्टी के गुड्डे गुड़िया बनाना।

मुलाकात

मुलाकात थी पहली वो फसाना बना गया,
नजरे मिलाके मुझको दिवाना बना गया।

सब देखते ही रह गये महफिल मे उसे यूँ,
दिल को हमारे कब वो ठिकाना बना गया।

लुका छिपी का खेल ये कब तक चलेगा यूँ,
निगाहों से अपनी वो तो निशाना बना गया।

आँखो के वो रस्ते से ज़िगर में समा गया,
जिंदगी के सफर को वो सुहाना बना गया।

बेताब दिल मचल - मचल रहा है, बार - बार,
अरमानों को जगा के तराना बना गया।

शायराना थी, हर बात जो कानों में खनकती,
खुल जायें ना लब डर से बहाना बना गया।

अब हो सितम अगर से हमें कोई ग़म नहीं,
चाहत के वो मौसम का जमाना बना गया।

जिंदगी मिली हमको खुशी के पल मिले "अलका"
मुहब्बत का दिल को एक आइना बना गया।

पैगाम

झूठी बातों का, मत समझ,कोई अंजाम नहीं।
फकत सब पा लेना ही यहाँ कोई नाम नहीं।

बीत जाती है, जिंदगी किसी के इंतजार में,
यूँ ही पल दो,पल का, यहाँ कोई काम नहीं।

गुनगुनाते थे, कभी हम, संग मिल यारों के,
नही होती, यहाँ अब, ऐसी कोई शाम नहीं।

गुमशुदा हो गये हैं लोग, ढूँढ मंजिल को यहाँ,
थम गये जो राह में, उनका ये मुकाम नहीं।

सोच बैठे थे, लायेगा, वो संदेश कोई,
बोला डाकिया इसमें तो, तेरा पैगाम नहीं।

जो दिल तुम्हारा कहे वो ही, तुम काम करो,
सख्सियत है, मेरी ये कोई की गुलाम नहीं।

मेरा वजूद गंगा की, धारा के जैसा,
लगा न पाये मुझपे, कोई इल्जाम नहीं।

हवा जुनूँ की इरादों को, तुम अलका दे दो
और फिर इक भी लम्हे का कोई आराम नहीं।

सावन की पहली बारिश

मंजिल को पाने को देखो सदा वो अड़ा होता है।
राह पर चलने को देखो सदा वो खड़ा होता है।

जब चलती है तेज वो अपनी रवानी को लेकर,
तब नदी के किनारों पर बेनाम पड़ा होता है।

सूखी रोटी से उसको भरपूर सुकून है मिलता,
सदा दोस्ती में यारों दिलदार बड़ा होता है।

गिरकर जो भी सम्हलता, उसको ही मंजिल मिलती,
उसका हर इक तोहफा सुनलो स्वर्ण से जड़ा होता है।

जुल्मोसितम का है, या इंकलाब का ज्वार ये,
आज लहू न यूँ ही नस-नस में उमड़ा होता है।

कुर्सी पाने को नेता, भोली जनता को ठगते,
पर नहीं करते जब वादे पूरे, साफ सुपड़ा होता है।

न मिलते इक दूजे से बेचैन वो हो जाते सुन,
चेहरा उन दोनो का यारों उखड़ा-उखड़ा होता है।

रिमझिम - रिमझिम बूँदें, सावन की पहली बारिश,
भीगे जब बारिश में वो तो चंचल मुखड़ा होता है।

अलका मन को कैसे, समझाये तुम बतलाओ,
दिल खुशी के गीत गाता गम का दु:खड़ा होता है।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - अलका चौधरी
जन्म - 23.09.1972, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.)
पिता - श्री सी.एल. चौधरी
शिक्षा - एम.ए. हिन्दी एवं अंग्रेजी साहित्य, बी.एड.
निवास - बालाघाट (म.प्र.)
विधा - गद्य लेखन, गीत, छंद, मुक्तक, और गजल
संप्रति - प्राचार्या (शिक्षा विभाग), सदस्य- बाल अधिकार मंच, जिलाध्यक्ष - राष्ट्रीय कवि संगम नगर संयोजक- पूर्व अ.भा.साहि. परिषद, सचिव- सहमत सामाजिक साहित्यिक संस्था, सह संपादक - पूर्व साहित्य शिखर त्रैमासिक पत्रिका, जिले के समस्त सामाजिक - साहित्यिक संस्थाओं में ज्ञानार्जन हेतु सक्रियता

प्रकाशन - सांसो की रागिनी (काव्य संग्रह),
साझा संग्रह - काव्योदय प्रथम, काव्योदय द्वितीय,
गुंजन(गज़ल संग्रह), मकरंद (दोहा मुक्तक संकलन), मेरे आलेख (आलेख संग्रह)
स्थानिय अखबारों में नियमित संपादकीय आलेखों का प्रकाशन
आकाशवाणी में लगातार सामयिक, सामाजिक, शैक्षणिक विषयों पर चर्चा वार्ता।

सम्मान
1. साहित्य शशि सम्मान 2015 (तिरोड़ी)
2. शब्द शक्ति सम्मान 2016 (भोपाल)
3. काव्य साधना सम्मान 2016 (लांजी)
4. काव्य शिल्पी सम्मान 2016,
5. राष्ट्र भाषा गौरव सम्मान 2017 (बालाघाट)
6. काव्य गौरव सम्मान 2017 (दिल्ली)
7. भाषा सारथी सम्मान 2018 (वारासिवनी)
8. हिन्दी साहित्य भूषण 2018 (नागपुर महा.)
9. अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2018 (भोपाल)
10. वुमन आवाज सम्मान 2018 (भोपाल)।

सहित अनेक शैक्षणिक एवं साहित्यिक व सामाजिक सम्मान।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-92-5
मूल्य- 60/-